## पद १४९

(रागः मुलतानी – तालः धुमाळी) रामनाम जप साधू जबलग सांसा ।।ध्रु.।। गाफिल में मत दिन

गमावो | तब पछतावे जब जम डारे फांसा ||१|| तू कहता मेरा माल खजाना | साथ नही आवेगा रतिमासा ||२|| मानिक के मन

सुन रे मुसाफिर। मंजिल चलना नहीं तेरा बासा।।३।।